www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नवरात्रि का पावन पर्व

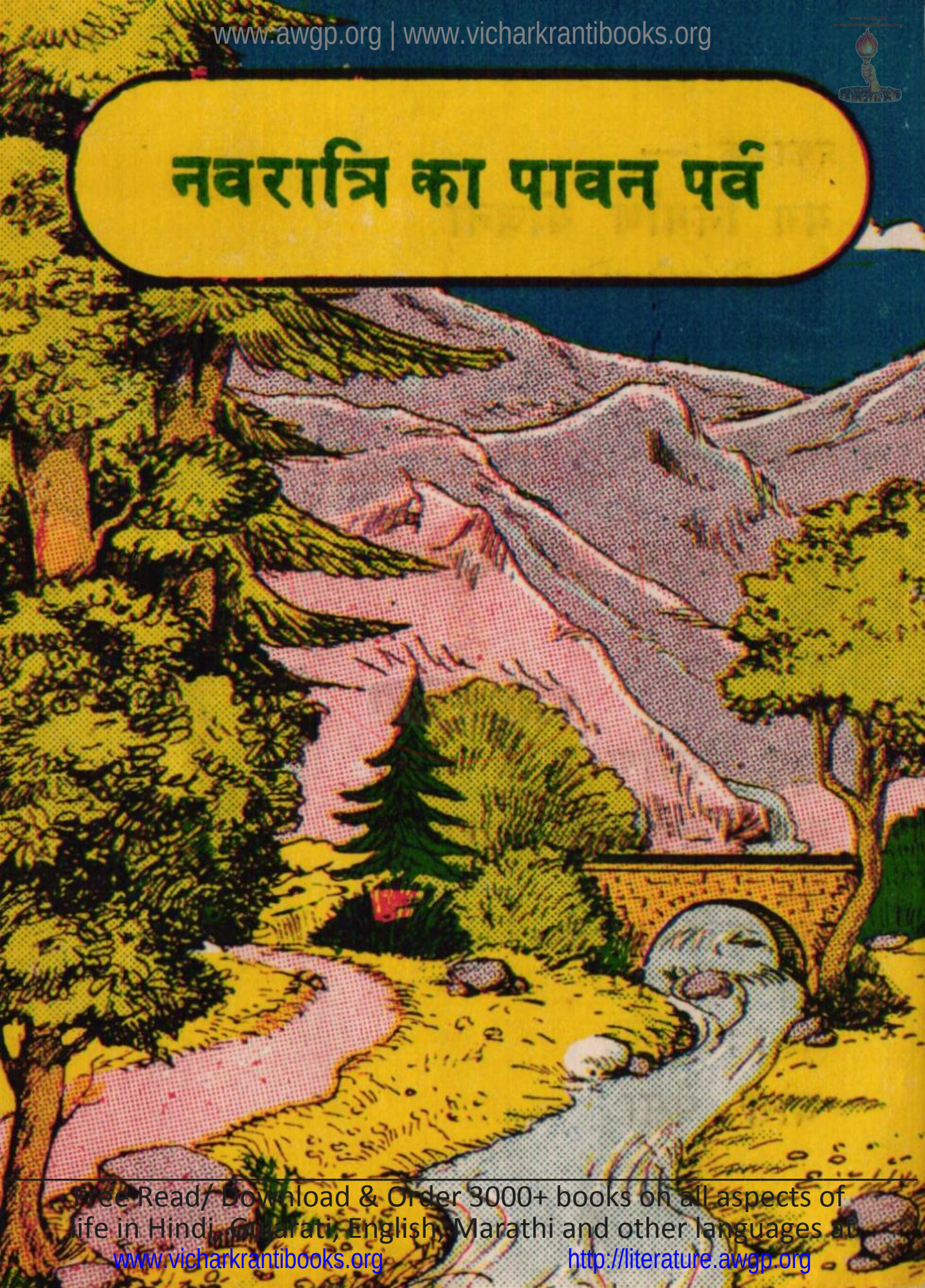

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN

SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :—

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि

मथुरा (उ० प्र०)

लेखक :—

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

मुद्रक :—

युग निर्माण प्रेस

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

जनवरी १९८०

मूल्य :

बोस पैसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नवरात्रि का पावन पर्व

—卐—

यों तो हर दिन भगवान का बनाया हुआ है और हर घड़ी सत्कर्मों के लिए शुभ है। भगवान का नाम कभी भी और किसी भी स्थिति में लिया जा सकता है। विधि की जानकारी न होने पर भी भगवान के दरवार में मात्र श्रद्धा और सद्भावना के सहारे प्रवेश पाया जा सकता है। इतने पर भी उपयुक्त अवसर का महत्व है। खेत में बीज बोने के कुछ विशेष दिन होते हैं। उन दिनों बोने पर अधिक अच्छी फसल पैदा होती है। यों बोने उगने का सिलसिला कभी भी चल सकता है पर परिणाम में अन्तर रहेगा। ऋतु स्थान और गर्भ धारण से भी उपयुक्त अवसर की गरिमा ही सिद्ध होती है।

भूख का उभार मध्यान्ह और रात्रि को आता है। प्रायः

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसी समय सबकी भोजन की इच्छा होती है । पाचन रस भी उस समय अनायास ही स्रवित होते हैं । यों खाने को तो बहुत तड़के,तीसरे प्रहर और आधी रात्रि को भी खाया जा सकता है पर उपयुक्त अवसर न होने से उसका पाचन ठीक प्रकार न हो सकेगा । उपासना के लिए प्रातः काल का वह समय सर्वोत्तम माना गया है जिस समय कि दिन और रात्रि दोनों मिलते हैं । उस संधि वेला में की गई उपासना संध्या कही जाती है । अनुभवियों का कहना है कि उस प्रभात कालीन वातावरण में की गयी उपासना अधिक आनन्द दायक और अधिक फल प्रद होती है ।

महत्व पूर्ण साधना तपश्चर्या के लिए उपयुक्त समय आश्विन और चैत्र की नवरात्रि का है । यह ऋतु संध्या का पुनीत पर्व है । यों ऋतुए होती तो छः हैं पर उन में सर्दी व गर्मी दो ही मुख्य हैं । इन दोनों ऋतुओं का मिलन काल नौ-नौ दिनों तक वर्ष में दो बार चलता है । इन दिनों को उपासना को दृष्टि से अत्यधिक महत्व दिया गया है । अन्य समय में किये गये अनुष्ठान धर्मकृत्यों की अपेक्षा इन दिनों जो किया जाता है वह अधिक फल प्रद होता है । तन्त्र शाखा में नवरात्रियों में आत्मा के ऋतुमती होने का

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उल्लेख है और कहा गया है उन दिनों ब्रह्म बीज धारण करने पर मनोवाँछित सिद्धि सन्तान की प्राप्ति होती है।

नवरात्रि के दिनों में प्रकृति का अन्तराल विशेष रूप से उल्लसित होता है और उसका प्रभाव शरीरों और मनों पर असाधारण रूप से पड़ता है। आश्विन नवरात्रि में शरद ऋतु होती है। शरद की शोभा का वर्णन करते करते कवि थकते नहीं। चैत्र नवरात्रि से वसन्त ऋतु होती है। माघ सुदो पंचमी से उसका आरम्भ होता है। पूरा चैत्र बसन्त है। उस समय वृक्ष वनस्पतियों से लेकर प्राणि मात्र में अभिनव उमंगे उभरते हुए प्रयत्क्ष देखी जा सकती हैं।" शरीर में उत्साह और मनों में उल्लास छाया रहता है। प्रकृति दवे हुए रोगों को इन्ही दिनों उभार कर वाहर निकालेने का प्रयत्न करती है। चिकित्सा शास्त्री शरीर शोधन की विशेष क्रियाऐं इन्हीं दिनों करते हैं। कायाकल्प का विधान तो विशेष तया इन्हीं दिनों पूर्ण करना पड़ता है। ऐसे महत्व पूर्ण अवसर पर किया गया आत्म साधन, अन्य सामान्य समय की अपेक्षा कही अधिक फल प्रद होता है। दो बार भर पेट भोजन कर लेने पर दिन भर की भूख़ समस्या का हल हो जाता है ठीक इसी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकार वर्ष में दो बार नवरात्रि तपश्चर्या कर लेने पर भी बैटरी चार्ज करने जैसी सक्रियता बनी रहती है। मोटर की बैटरी बहुत समय काम करते रहने पर जब शिथिल पड़ जाती है, तो चार्जर के साथ जोड़ कर फिर से उसमें बिजली भर दी जाती है और वह नई की तरह फिर से काम करने लगती है। वर्ष में दो बार आध्यात्मिक बैटरी चार्ज कर लेने से भी आध्यात्मिक सामर्थ्य का स्रोत प्रवाहित होता रहता है। यह विशेष समय की विशेष उपासना है, सामान्य दैनिक उपासना तो चलती ही रहनी चाहिए।

नवरात्रि पर्व काल है। सभी पर्व सामूहिक रूप से मनाये जाते हैं। वसन्तोत्सव, शिव रात्रि,होली, रामनवमी गंगा दशहरा, गायत्री जयन्ती, गुरु पूर्णिमा,श्रावणी, जन्माष्टमी, विजया,दशमी आदि सभी पर्वों को सामूहिक रूप से मनाने की प्रथा है। इनमें से कितने ही पर्वों पर बड़े बड़े धार्मिक मेले सम्पन्न होते हैं। और किसी तीर्थ विशेष में एकत्रित होकर सहस्रों मनुष्य एक साथ स्नान एवं देव दर्शन करते हैं। कुंभ पर्व विशाल मेलों के रूप में में ही होते हैं। यात्राओं के लिए लोग झुण्ड बनाकर निक-

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लते हैं। एक साथ एक समय एक जैसे विचारों के व्यक्ति एक उद्देश्य के लिए जब एक जैसा क्रिया कृत्य करते हैं तो सूक्ष्म विज्ञान के अनुसार उससे प्रचण्ड शक्ति का उद्भव होता है।

सहकारिता का लाभ लोक व्यवहार में पग-पग पर दिखाई देता है। दुर्बल धागे मिलकर मजबूत रस्सा बनाते हैं। अलग-अलग सैनिकों का कोई महत्व नहीं पर जब वे मिल जुलकर संगठित सैना बनाते है तो मोर्चे पर मोर्चे जीतते चले जाते है। चींटी दीमक और मधुमक्खियाँ तक सामूहिक श्रम का महत्व समझती हैं। मनुष्यों द्वारा कल कारखाने, उद्योग, व्यवसाय, शासन, समाज मिल जुलकर ही चलाये जाते हैं। लोक सेवा का कार्य भी विभिन्न संस्थान संगठित समितियों के रूप में ही मिलकर करते है। जिस प्रकार भौतिक जीवन में मिलजुल कर प्रगति होती है ठीक उसी प्रकार आत्मिक प्रयोजनों की पूर्ति के लिए भी सामूहिक साधना का विधान ऋषियों ने बनाया है।

मिलजुल कर ही आध्यात्मिक शक्ति चक्र सामूहिक प्रयत्नों से ही घूमता है और उसी से महान प्रयोजन पूरे होते हैं। देवताओं की शक्ति को एकत्रित करने से ही

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रजापति ने देवी दुर्गा का सृजन किया था और उसी से असुरों का विनाश तथा देवताओं का वर्चस्व बन सका। ऋषियों ने अपने रक्त का संचय करके घट भरा था और उससे सीता का जन्म हुआ था। सीता के कारण ही रावण का आतंक समाप्त हुआ और राम राज्य का आधार बना। रीछ बानरों ने मिलकर सेतु बन्ध बांधा और गोप ग्वाल बालों के सहयोग से गोवर्धन उठा। भगवान बुद्ध के भिक्षु और गान्धी के सत्याग्रही सामूहिक शक्ति के आधार पर ही अपना लक्ष्य प्राप्त कर सके। माना कि स्नान शयन, शोधन लेखन, चिन्तन जैसे कुछ कार्य ऐसे भी हैं जिनमें एकाकी पन ही सुविधा जनक होता है। पर सामान्य जीवन में उपासना भी सामूहिक ही शक्ति शाली होती है। और उससे समूचे वातावरण से ऐसा प्रभाव उत्पन्न होता है जो युग प्रवाह को मोड़ सकने में समर्थ हो सके। भगवान राम ने दश विशाल काय अश्व मेध करके असुरी वातावरण का आध्यात्मिक उपचार द्वारा परिशोधन किया था। दशाश्वमेध घाट उसी की स्मृति दिलाता है। भगवान कृष्ण ने पाडवों से विशाल राजसूय यज्ञ कराया था और उससे कंसकालीन आसुरी वातावरण

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का समाधान किया गया था। आज भी ऐसे ही सामूहिक धर्मानुष्ठानों की आवश्यकता है जो युग प्रवाह वदलने और उपयोगी परिवर्तन ला सवने में समर्थ हो सकें। प्राचीन काल में नवरात्रियां इसी उद्देश्य के लिए सामूहिक धर्मानुष्ठान के रूप ने मनाई जाती थीं। उस पुण्य परम्परा को अब पुनः उसी रूप में पुनर्जीदित किया जाना चाहिए। नवरात्रि की साधना सर्वत्र सामूहिक रूप से होनी चाहिए

अभी भी नवरात्रि पर्व पर विभिन्न प्रातों में विभिन्न प्रकार के धार्मिक उत्सव होते हैं बंगाल में दुर्गा पूजा, गुजरात में अम्वाजी गरवा—राजस्थान में गणगौर—मध्य प्रदेश में झाँझी उत्तर प्रदेश में रामलीला, आसाम त्रिपुरा में कृष्ण लीला की इन दिनों धूम रहती है। और स्थान-स्थान पर यह आयोजन छोटे वड़े रूप में सम्पन्न होते हैं। यह सब ठीक है, किन्तु सामूहिकता के साथ दिशा भी चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि समूचे देश में समूचे विश्व में यह महान पर्व सुनिश्चित लक्ष्य आत्म परिष्कार एव आत्मोत्कर्ष की पूर्ति के लिए एक रूपता से मनाया जाय।

जन मानस के परिष्कार उसमें पवित्रता और प्रखरता

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भर देने के लिए गायत्री उपासना का महत्व सर्व विदिति है । वही भारतीय तत्वज्ञान–धर्म, अध्यात्म और संस्कृति का उद्गम स्रोत है। ब्रह्म विद्या और ब्रह्म तेज का–सूक्ष्म ज्ञान-विज्ञान का स्रोत गायत्री के २४ अक्षरों में कूट–कूट कर भरा हुआ है । उसमें भक्ति और शक्ति की दोनों मूल धाराओं का समन्वय है। नवरात्रि आयोजनों को गायत्री अनुष्ठान की पुण्य परम्परा के रूप में ही विकसित किया जाय । यह पुनीत कार्य थोड़ा सा उत्साह उभारने और व्यवस्था का थोड़ा भी प्रयास करने से ही सम्पन्न हो सकता है। इससे युग के अनुरूप लोक शिक्षण करने–आध्यात्म की युग शक्ति उभारने-सामूहिक साधना से वातावरण का परिशोधन करने–धर्म चेतना में लोक निष्ठा उत्पन्न करने—गायत्री तत्वाज्ञान को विश्व निर्माण का आधार बनाने जैसे असंख्य पुण्य प्रयोजन इससे पूरे हो सकते हैं। भारतीय संस्कृति का समूचा तत्वज्ञान गायत्री मन्त्र की व्याख्या करते हुए जैसी अच्छी तरह समझाया जा सकता है उतना और किसी आधार पर नहीं। इस ध्वजा को हाथ में लेकर धर्म चक्र प्रवर्तन के अभियान में उत्साह पूर्वक बढ़ा जा सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री उपासना पर बहुत दिनों भ्रांतिवश प्रतिबन्ध लगा रहा। यह भ्रम अब अधिकांश स्थानों से हट चुका है जहाँ रह गया हो वहाँ से भी हट जाना चाहिए। जो भी व्यक्ति अपनी मनोभूमि श्रद्धा सिक्त करके यह साधना करता है उसका सब प्रकार हित ही होता है। अतः नवरात्रि में हर व्यक्ति को अनुष्ठान करने का प्रयास करना चाहिए।

आश्विन नवरात्रियों के पीछे दुर्गा अवतार द्वारा महिषासुर आदि को, राम द्वारा रावण आदि को परास्त करके विजय प्राप्त करने का इतिहास है यह अधर्म के विनाश की एक प्रक्रिया है। धर्म की स्थापना का तत्व ज्ञान चैत्र की नवरात्रियों में राम जन्म के रूप से विद्यमान है। विक्रमादित्य को भी दूसरे राम राज्य का संस्थापक माना जाता है। राम राज्य की स्थापना पर नवीन संवत्सर चला था। विक्रमी का भी यही इतिहास है। चैत्र नवरात्रि को धर्म साधना और आश्विन नवरात्रि को अधर्म के विनाश का पर्व माना जा सकता है दोनों के समन्वय से ईश्वर अवतार के पुण्य प्रयोजन की पूर्ति होती है। युग परिवर्तन के लिए दुष्प्रवृत्तियों के निराकरण और सत्प्रवृतियों के संवर्धन की आवश्यकता पड़ेगी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन दोनों ही गति विधियों के लिए समुचित प्रकाश देने और शक्ति देने की क्षमता नवरात्रि पर्व में मौजूद है। समय की माँग है कि महान अतीत को पुनर्जीवित करने और उज्ज्वल भविष्य को निकट तम लाने के लिए नवरात्रि पर्व को प्रेरणा स्रोत की तरह अपनाया जाय। इसमें ऋषि प्रयोजनों की पूर्ति और संस्कृति की आत्मा की पुनः जागरणा का दुहरा लक्ष्य पूरा होता है। जन मानस में धर्म चेतना और अध्यात्म तत्व ज्ञानमें गहरी निष्ठा उत्पन्न करने के लिए नवरात्रि के पुण्य पर्वों को सामूहिक गायत्री अनुष्ठानों के रूप में मनाया जाना अतीव श्रेयस्कर सिद्ध होगा इसे धर्म परम्परा के रूप में प्रचलित करने के लिए धर्म प्रेमी दूर दर्शी विवेक वानों को सक्रिय प्रयत्न करने चाहिए।

गायत्री अनुष्ठान नौ दिन में सम्पन्न होते हैं। प्रति दिन २७ माला जप करने में इस अवधि में २४ हजार का गायत्री अनुष्ठान सम्पन्न हो जाता है। इसमें प्रायः ढाई तीन घन्टे लगते हैं जो एक बार या दोबार में बड़ी आसनी से पूरे हो सकते हैं। जिनमें थोड़ी सी धर्म प्रवृत्ति हो जिनमें उपासना के प्रति तनिक भी श्रद्धा हो उनसे

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्पर्क बनाने और गायत्री उपासना तथा नवरात्रि पर्व का समान्वित लाभ समझाने का यदि योजना बद्ध प्रयत्न किया जाय तो सर्वत्र बड़ी संख्या में इस उपासना में भाग लेने के लिए साधक मिल सकते हैं। सामूहिक आयोजनों में सम्मिलित होने का वैसे भी सहज उत्साह लोगों में रहता है फिर वस्तुस्थिति समझा देने पर तो उसके लिए जन उत्साह उत्पन्न किया जा सकना और भी सरलहै।

सबकी सुविधा का खुली हवा का उपयुक्त स्थान एवं समय तो पहले ही निर्धारित कर लिया जाय। बिछावट आच्छादन, पूजा वेदी, प्रकाश, पूजा उपकरण, पंडाल सज्जा आदि का समुचित प्रबन्ध रखा जाय। प्रातःकाल की उपासना अवधि पूरे दो घन्टे की रहे। उतने समय में जिसका जितना जप पूरा हो जाय वहाँ करले और जो शेष रहे उसे तीसरे प्रहर सांयकाल जब भी सुविधा हो तब करले। रात्रि का ढाई घन्टे का ज्ञान यज्ञ हो। संगीत और प्रवचन का कार्यक्रम रहे। प्रवचन में गायत्री मन्त्र में सन्निहित प्रेरणाओं से जन साधारण को परिचित कराया जाय। गायत्री महाविज्ञान के द्वितीय खण्डमें गायत्री गीता

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री स्मृति, गायत्री, मंजरी, गायत्री रामायण आदि का संकलन है। उनमें से चुने हुए श्लोकों की व्याख्या करने की यदि पूर्व तैयारी करली जाय तो प्रवचन इतने प्रेरक हो सकते हैं क आज की वैज्ञानिक, पारिवारिक सामाजिक समस्याओं का समाधान उसी आधार पर भली प्रकार प्रस्तुत किया जा सके। बौद्धिक नैतिक और सामाजिक प्रगति के समस्त सूत्र इसमें विद्यमान हैं। आस्तिकता आध्यात्मिकता और धार्मिकता के समस्त तत्व इनमें इस प्रकार भरे पड़े हैं जिन्हें अपनाने पर भौतिक सुख शान्ति और आत्मिक स्वर्ग मुक्ति का उभय पक्षीय लक्ष्य प्राप्त हो सकता है।

अन्तिम दिन सामूहिक गायत्री यज्ञ किया जाय। पूर्णाहुति के बाद विसर्जन जुलुस निकाला जाय। गायत्री माता के चित्र की तथा पूजा उपचार की बची हुई सामिग्री भरे कलश की शोभायात्रा सुसज्जित रूप में निकाली जाती है। यह विसर्जन—बंगाल की दुर्गा पूजा एवं महाराष्ट्र की गणेश महोत्सव के विसर्जन प्रक्रिया जैसा होना चाहिए। किसी पवित्र जलाशय में बहाने तथा पवित्र भूमि में दबाने के लिए जो स्थान निश्चित हो

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वहाँ तक जुलूस जाना चाहिए। जाने और लौटने के रास्ते अलग-अलग होने चाहिए। आदर्श वाक्य, सहगान वाजे गाजे इस जुलूस की शोभा और प्रभाव शक्ति को बढ़ाते हैं।

अन्त में साधकों को प्रीति भोज, सह भोज, ब्रह्म भोज की इच्छा हो तो वह पूड़ी मिठाई का नहीं वरन् चावल दाल खिचड़ी दलिया आदि भगौने में पक सकने वाले पदार्थों का होना चाहिए। इसमें सस्तापन, शुद्धता तो हैं ही साथ ही कच्ची पक्की की संकीर्णता का इसमें अवसान है। भविष्य में विशाल सम्मेलन आयोजित करने पड़ेंगे उनमें इसी स्तर का भोजन सरल एवं सस्ता पड़गा इसलिए सहभोजों की अपना परम्परा का इसी प्रकार निर्धारण होना चाहिए।

आयोजन के अन्त में ब्रह्म भोज, कन्या भोज प्रसाद वितरण आदि के माध्यम से दान पुण्य की प्रथा है। यह उत्तम है इसे जीवन्त रखना चाहिए। हर अनुष्ठान कर्ता को न्यूनतम सवा रुपये इस मद में खर्च करने के लिए कहा जाना चाहिए। उतनी स्वल्प राशि में युग निर्माण योजना मथुरा द्वारा प्रकाशित २० अत्यन्त प्रेरणा प्रद एवं लागात से कम मूल्य में मिलने वाली 'प्रसाद वित-

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रण सामिग्री मंगाई जा सकती है। ज्ञान यज्ञ को हवन प्रक्रिया का पूरक माना जाना चाहिए। क्षण भर के लिए जोभ मीठी करने के स्थान पर आत्मा में मिठास भरने वाली इस ज्ञान यज्ञ सामिग्री का ब्रह्म दान असंख्य गुना अधिक पुण्य फलदायक होगा। आवश्यक नहीं यह वित-रण पूर्णाहुति के दिन ही हो जाय। उसे उपयुक्त व्यक्तियों के घरों पर जाकर अथवा डाक द्वारा बहुत पीछे तक पहुँचाया जाता रह सकता है।

नवरात्रि अनुष्ठान यों २४ हजार जप के होते हैं। पर जिन्हें अस्वस्थता व्यस्तता आदि कारणों में उतना समय लगा सकना कठिन पड़ता हो उनके लिए सरल अनुष्ठान भी हैं। पंचाक्षरी गायत्री। ॐ भू र्भुवः स्वः का २४ हजार जप प्रति दिन एक घण्टा लगाने मात्र में पूरा हो सकता है, गायत्री चालीसा के १०८ पाठ अथवा २४० गायत्री मन्त्र लेखन के भी दो सरल अनुष्ठान हैं। यह भी एक घन्टा प्रति दिन समय लगाने पर पूरे हो सकते हैं जो लोग पूरे नौ दिन समय न लगासकें वो अन्तिम तीन दिन उस आयोजन में सम्मिलित रह कर अनुपातिक पुण्य फल के भागी दार बन सकते है।

अनुष्ठान काल की पाँच तपश्चर्यायें हैं (१) उपवास

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(२) ब्रह्मचर्य (३) भूमि या तख्त पर सोना (४) अपने शरीर की सेवा आप करना (५) चमड़े की वस्तुओं का त्याग। इनमें से ब्रह्मचर्य तो पूर्ण तया अनिवार्य है। उपवास के हलके भारी कई प्रकार हैं यथा (१) दूध, छाछ शाकों का रस आदि प्रवाही पदार्थ (२) फलाहार शाकाहार दुग्धाहार (३) अस्वाद भोजन बिना नमक का (४) भगौनेमें पकाये जाने वाले दाल चावल, दलिया खिचड़ी आदि पर निर्वाह (५) एक खाने की एक लगाने की मात्र दो ही वस्तुओं पर नौ दिन तक गुजारा। उनमें से जिसके लिए जो बन पड़े वह सरल कठिन उपवास चुना जा सकता है। भूमि शयन के स्थान पर तख्त उपयोग में आ सकता है, अपनी सेवा आप करने में अपने घर वालों की सेवा स्वीकार हो सकती है। चमड़े ही के जूतों के स्थान पर रबड़ या प्लास्टिक के जूते चप्पल पहनने में किसी को कोई कठिनाई नहीं हो सकती। जप एवं हवन के समय कन्धे पर पीला दुपट्टा रहे। महिलाएं पीली साड़ी पहनें। यह पीत वस्त्र गायत्री उपासना का प्रतीक चिन्ह है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुष्ठान एक प्रकार का तप है। उसे असफल बनाने के लिए प्रायः आसुरी शक्तियाँ बाधा पहुँचाती-रहती हैं। उपासना विधि में जाने अनजाने में कुछ त्रुटियाँ रह जाती हैं। इसका संरक्षण करने के लिए आनुष्ठान का कोई समर्थ संरक्षक नियुक्ति करना आवश्यक होता है। यह सेवा शान्ति कुन्ज हरिद्वार से ली जा सकती है। अनुष्ठान से पूर्व सूचना देने पर वहां साधना संरक्षण और दोष परिमार्जन का उत्तर दायित्व संभाल लिया जाता है। ऐसे संरक्षण प्राप्त कर्ताओं को अनुष्ठान सम्पन्न होने की सूचना भेजन पर आर्शीवाद पत्र भी वहां से भेजा जाता है।

सामूहिक नव रात्रि साधना से सब का सर्व प्रकार श्रेयस्कर परिणाम ही उपलब्ध होता है इतना निश्चित है कि कसी की गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती नवरात्रि उपासना में तो उसका प्रति फल और भी अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है।

—★—

मुद्रक--युग निर्माण प्रेस मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग निर्माण मिशन—संक्षिप्त परिचय

उद्देश्य—मनुष्य में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण। व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण। विचार-क्रान्ति, नैतिक क्रान्ति, सामाजिक क्रान्ति। जन-मानस का भावनात्मक परिष्कार।

गठन—नव निर्माण के लिए तत्पर नित्य श्रमदान और अंशदान करने वाले पाच लाख कर्मनिष्ठों का पारिवारिक गठन। दस-दस की टोलियाँ उत्कृष्ट चिन्तन और आदर्श कर्तृत्व के लिए निरत। प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यक्रमों द्वारा मानवीय गरिमा को उभारने वाली गतिविधियों में संलग्न समुदाय।

आधार—सदस्यों का दैनिक श्रमदान, अंशदान। दस पैसा नित्य और एक घण्टा समय का नियमित अनुदान, इसी सामर्थ्य के बलबूते अनेकों अति महत्वपूर्ण गतिविधियों का गत ३० वर्ष से संचालन।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

3000 x 1/2

संस्थान—(१) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (२) युग-निर्माण योजना, मथुरा (३) शान्ति कुंज हरिद्वार (४) ब्रह्मवर्चस् हरिद्वार ।

प्रकाशन—छै मासिक, एक पाक्षिक तथा एक साप्ताहिक का नियमित प्रकाशन । ग्राहक—संख्या लाखों में । जीवन साधना सन्दर्भ में ४०० पुस्तकों का प्रकाशन । देश की कई महत्वपूर्ण भाषाओं में निजी प्रेस द्वारा ।

गतिविधियाँ व प्रचार—धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण अग्नि साक्षी में सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के संकल्प, रामायण व गीता के माध्यम से लोकशिक्षण । एक सौ—पूर्ण समयदानी, सुयोग्य, सुसंस्कृत प्रचारकों का संगठन । दस-दस दिवसों के जीवन—साधना शिविर । युग निर्माण विद्यालय मथुरा, महिला जागरण एवं कन्या विद्यालय हरिद्वार, ब्रह्मवर्चस् साधना हरिद्वार । स्लाइड प्रोजेक्टर व टेप रिकार्डरों द्वारा युग सन्देश का विस्तार । कार्यक्षेत्र समस्त भारतवर्ष व विदेशों में प्रवासी भारतीय ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org